X

हिंदी

उत्तर-सूचिका

HINDI WORKSHEET

14

तिरुवनंतपुरम शैक्षिक जिला

उत्तर-सूचिका 14

I

इकाई 4

कक्षा 10

बसंत मेरे गाँव का

मुकेश नौटियाल

लेख

' बसंत मेरे गाँव का ' लेख का यह अंश पढ़ें और अनुबद्ध प्रश्नों के उत्तर लिखें

मकर संक्रांति के बाद सूरज पंचाचूली के शिखरों से चौखंभा पर्वत की तरफ़ खिसकना शुरू कर देता है। दादी कहती थीं कि जेठ तक सूरज हर सुबह बालिश्त भर छलाँग मारता है। पंचाचूली से चौखंभा तक पहुँचने में सूरज को पूरे चार महीने का समय लग जाता है।

पंचाचूली की पाँच बर्फ़ानी चोटियों और चौखंभा के चार शिखरों के ऐन बीच में जो पहाड़ नज़र आ रहा है वह नंदा पर्वत है। सूरज पंचाचूली से खिसककर जब नंदा पर्वत तक पहुँचता है तो पहाड़ों में फ्योंली के पीले फूल खिलने लगते हैं। पहाड़ी ढलानों पर खूबसूरती से कटे सीढ़ीनुमा खेतों में गेहूँ की हरियाली के बीच सरसों की पीलाई पसर जाती है। बसंत बौराने लगता है।

बसंत फूलदेई का त्यौहार लेकर आता है। देर शाम तक बच्चे फूल चुनते हैं। इन फूलों को रिंगाल (बाँस की एक प्रजाति) से बनी खास तरह की टोकरियों में रखा जाता है। टोकरियों को रात भर पानी से भरी गागरों के ऊपर रखा जाता है ताकि वे सुबह तक मुरझा न पाएँ। सुबह पौ फटते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं। पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए जाते हैं। जिनके घरों में फूल सजाए जाते हैं वे बच्चों को चावल, गुड़, दाल आदि देते हैं। दक्षिणा में मिली यह सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठा की जाती है। फूलदेई की विदाई के साथ बसंत का यह उत्सव समाप्त हो जाता है।

Bhuvanthauran Educational District

- फूलदेई का त्यौहार कब मनाया जाता है ?
  (बसंत ऋतु में , वर्षा ऋतु में, ग्रीष्म ऋतु में)
  बसंत ऋतु में .....
- ' पीले फूल ' में ' पीले ' शब्द किसको सूचित करता है ?
  (विशेषण, क्रिया, संज्ञा)
  विशेषण .....
- ' जिनके ' में निहित सर्वनाम कौन–सा है ?
  (जिन, जिस, जो)
  जो .....
- पंचाचूली पर्वत की कितनी चोटियाँ हैं ?
  (पाँच , चार , तीन)
  पाँच .....
- 'बसंत मेरे गाँव का' किस विधा की रचना है ?
  (लेख, कहानी, कविता)
  लेख .....
- ' पौ फटना ' से क्या तात्पर्य है ?
  (प्रभात होना , रात होना , वर्षा होना)
  प्रभात होना .....

उत्तर-सूचिका 14

II

सही मिलान करें।

कक्षा 10

मकर संक्रांति के बाद सूरज	नंदा पर्वत स्थित है।
चुने गए फूलों को	पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठा की जाती है।
दक्षिणा में मिली सामग्री	चौखंभा पर्वत की तरफ़ खिसकना शुरू कर देता है।
बसंत	पीले रंग का है।
सरसों का फूल	बौराने लगता है।
सूरज नंदा पर्वत तक पहुँचता है	रिंगाल से बनी टोकरियों में रखा जाता है।
पंचाचूली और चौखंभा के बीच	तो फ्योंली के फूल खिलने लगते हैं।

Thiruvananthauram Educational District

मकर संक्रांति के बाद सूरज	चौखंभा पर्वत की तरफ़ खिसकना शुरू कर देता है।
चुने गए फूलों को	रिंगाल से बनी टोकरियों में रखा जाता है।
दक्षिणा में मिली सामग्री	पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठा की जाती है।
बसंत	बौराने लगता है।
सरसों का फूल	पीले रंग का है।
सूरज नंदा पर्वत तक पहुँचता है	तो फ्योंली के फूल खिलने लगते हैं।
पंचाचूली और चौखंभा के बीच	नंदा पर्वत स्थित है।

(पंचाचूली से चौखंभा तक पहुँचने में सूरज को चार महीने का समय लग जाता है।)

पंचाचूली

नंदा पर्वत

चौखंभा

उत्तर-सूचिका 14

III

कक्षा 10

उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई त्यौहार मनाया गया – सूचनाओं की सहायता से इससे संबंधित रपट तैयार करें।

बच्चों का कोई दूसरा त्यौहार नहीं है।
घरवाले बच्चों को दक्षिणा के रूप में चावल, दाल, गुड़ आदि देते थे।
बच्चे गाँव भर घूमकर फूल चुना करते थे।
पानी से भरी गागरों के ऊपर रखे जाते थे।
इक्कीस दिनों से फूलदेई का त्यौहार मनाया जा रहा था।

Thiruvananthapuram Education District

फूलदेई त्यौहार धूमधाम से मनाया गया।

उत्तराखंड : यहाँ के हिमालयी अंचल में इक्कीस दिनों से फूलदेई का त्यौहार मनाया जा रहा था। इस त्यौहार में बड़ों की भूमिका सलाह देना मात्र रहा। बच्चे गाँव भर घूमकर फूल चुना करते थे। देर शाम तक चुने फूलों को रिंगाल से बनी टोकरियों में रखे जाते थे।फिर इन टोकरियों को रात भर पानी से भरी गागरों के ऊपर रखे जाते थे। गाँव के घरों की देहरियों को इन्हीं फूलों से सजाया जाता था। घरवाले बच्चों को दक्षिणा के रूप में चावल, दाल, गुड़ आदि देते थे। इक्कीस दिनों से इकट्ठी की गयी इन सामग्रियों से बच्चों ने सामूहिक भोज तैयार किया। त्यौहार के दिनों में नाटक, लोकगीत आदि विभिन्न कार्यक्रम चलाए गए। उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई से बड़ा बच्चों का कोई दूसरा त्यौहार नहीं है।

सूचनाओं की सहायता से ' प्रकृति और मनुष्य का आपसी संबंध ' विषय पर एक पोस्टर तैयार करें ।

सुरक्षा अस्तित्व प्रकृति

स्वच्छ जीवन

प्रकृति की रक्षा हमारी ...सुरक्षा...........

स्वच्छ प्रकृति ....स्वच्छ जीवन........... का आधार

प्रकृति........ को संभालो

प्रकृति नहीं है तो मनुष्य नहीं

Thiruvananthapuram Educational District